IJAER/May-June 2015/Volume-4/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

सत्य' एवं 'अहिंसा' की अवधारणा में गांधी का वैचारिक योगदान

Dr. Kalpana Bharadwaj

Lecturer in Political Science.

Govt PG College Sawai Madhopur Rajasthan

सार

गांधी सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक थे। सत्य और अहिंसा की अवधारणा के लिए उनका बहुत महत्व था। सत्य औरअहिंसा गांधी के दर्शन की नींव हैं। 'अहिंसा' शब्द संस्कृत शब्द 'अहिंसा' का अनुवाद है। उन्होंने कहा कि अपने सकारात्मक रूप में, 'अहिंसा' का अर्थ है 'सबसे बड़ा प्रेम, सबसे बड़ा दान'। इसके अलावा उन्होंने कहा कि अहिंसा हमें एक दूसरे से और ईश्वर से भी बांधती है। तो यह एक एकीकृत एजेंट है। गांधी ने लिखा, 'अहिंसा और प्रेम एक ही चीज हैं'। गांधी के अनुसार 'सत्य' शब्द 'सत्' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'अस्तित्व में होना'। तो 'सत्य' शब्द से गांधी का अर्थ यह भी है कि जो न केवल अस्तित्व में है बल्कि सत्य भी है। गांधी ने कहा कि सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, या यूँ कहें कि एक चिकनी बिना मुहर लगी धातु की डिस्क है। महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा (अहिंसा) के अपने संदेश के साथ इस धरती पर उस समय आए थे जब आक्रमण और हिंसा की ताकतों ने पृथ्वी पर सर्वोच्च शासन किया था। महात्मा गांधी ने हमें वही सिखाया जो क्राइस्ट और बुद्ध बहुत पहले से सिखाना चाहते थे। वह एक अमर आत्मा बन गए जो हमें शांति और अहिंसा के मार्ग पर ले जाती है। गांधी का जन्म राजकोट में गुजरात के एक मध्यमवर्गीय रूढ़िवादी हिंदू परिवार में हुआ था। भारत में अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, वह लंदन गए जहाँ उन्होंने खुद को बैरिस्टर-एट-लॉ की योग्यता प्राप्त की। महात्मा गांधी अहिंसा या अहिंसा के पथ के प्रतिपादक थे। बुद्ध, क्राइस्ट और चैतन्य की तरह वह भी हिंसा पर अहिंसा की अंतिम जीत में विश्वास करता था। उनके अनुसार बल या हिंसा पागलपन है जो टिक नहीं सकता। "तो अंततः बल या हिंसा अहिंसा के सामने झुकेगी"। उन्होंने न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध युद्ध छेड़ा था; बल्कि उन्होंने दुनिया भर में अधर्म, असत्य और अन्याय की सभी ताकतों के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। सत्य और अहिंसा का विचार महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों के मूल में है। लेकिन वह खुद स्वीकार करते हैं कि अहिंसा या 'अहिंसा' उनका जन्मजात गुण नहीं था। वह बस कहता है: "सत्य की खोज में यात्रा में मुझे अहिंसा मिलती है। मैंने केवल इसे पुनः प्राप्त किया है, कभी नया नहीं खोजा। वास्तव में सत्य और अहिंसा उनके जीवन दर्शन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वे मानते थे कि अहिंसा सत्य के भीतर है और इसी प्रकार अहिंसा में भी सत्य है। एक बार उन्होंने सोचा कि ईश्वर ही सत्य है लेकिन बाद में उन्होंने देखा कि सत्य ही ईश्वर है। इसलिए उन्होंने अपने संघर्ष का नाम 'सत्याग्रह' रखा। सत्याग्रही अहिंसा का उपासक होगा जो उसका जीवन और कर्तव्य होगा।

कीवर्ड: सत्य या सत्याग्रह, अहिंसाया अहिंसा,

परिचय:

गांधी सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक थे। सत्य और अहिंसा की अवधारणा के लिए उनका बहुत महत्व था, सत्य या सत्य, अहिंसा या अहिंसा गांधी के दर्शन की नींव हैं। मोहनदास गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को ब्रिटिश शासित भारत के पश्चिमी भाग में हुआ था। एक डरपोक बच्चे, उसकी शादी तेरह साल की उम्र की एक लड़की कस्तूरबाई से हुई थी। अपने पिता की मृत्यु के बाद, गांधी के परिवार ने उन्हें 1888 में कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैंड भेजा। वहां, उन्हें अहिंसा के दर्शन में दिलचस्पी हो गई, जैसा कि भगवद-गीता, हिंदू पवित्र शास्त्र और ईसाई बाइबिल में माउंट पर यीशु मसीह के उपदेश में व्यक्त किया गया है। वह 1891 में बार पास करके भारत लौट आए, लेकिन कानून का अभ्यास करने के अपने प्रयासों में उन्हें बहुत कम सफलता मिली। दृश्यों में बदलाव की मांग करते हुए, उन्होंने एक वर्ष के लिए दक्षिण अफ्रीका में एक पद स्वीकार किया, जहां उन्होंने एक मुकदमे में सहायता की। उन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की, जिसने भारतीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए काम किया, और एक भारतीय चिकित्सा कोर की कमान संभाली जो ब्रिटिश पक्ष से लड़ी। बोअर युद्ध (1899-1901) में, जिसमें अंग्रेजों ने अंतिम स्वतंत्र बोअर गणराज्यों पर विजय प्राप्त की। युद्ध के बाद, एक नेता के रूप में गांधी की प्रतिष्ठा बढ़ी। वह अपने व्यक्तिगत सिद्धांतों, यौन संयम का अभ्यास करने, आधुनिक तकनीक का त्याग करने, और सत्याग्रह-शाब्दिक रूप से "आत्म-बल" विकसित करने में और भी अधिक अडिग हो गए। सत्याग्रह अहिंसक प्रतिरोध का एक तरीका था, जिसे अक्सर "असहयोग" कहा जाता था, जिसे वह और उनके सहयोगी दक्षिण अफ्रीका में श्वेत सरकारों के खिलाफ बहुत प्रभाव डालते थे।

अर्थ

महात्मा गांधी के अनुसार, अहिंसा का तात्पर्य निस्वार्थता से है। यानी अगर कोई खुद को महसूस करना चाहता है, यानी अगर वह सत्य की खोज करना चाहता है, तो उसे इस तरह से व्यवहार करना होगा कि दूसरे उसे पूरी तरह से सुरक्षित समझें। गांधी के अनुसार, यह अहिंसा का तरीका है। वे केवल अहिंसा को ही अहिंसा नहीं मानते थे। उनके लिए अहिंसा नकारात्मक अवधारणा नहीं बल्कि प्रेम की सकारात्मक भावना है। उन्होंने गलत करने वालों से प्यार करने की बात की, लेकिन गलत करने वालों से नहीं। उन्होंने किसी भी तरह के गलत और अन्याय के प्रति उदासीन तरीके से प्रस्तुत होने का कड़ा विरोध किया। उनका विचार था कि गलत करने वालों का विरोध उनके साथ सभी संबंधों को तोड़कर ही किया जा सकता है।

सत्य और अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा

प्रकृति

गांधी के अनुसार अहिंसा कभी भी हिंसा से नहीं बचती। इसके विपरीत, यह अहंकार और हिंसा के विरुद्ध निरंतर संघर्ष करता रहता है। इसलिए वे शांतिवादी को अहिंसक नहीं मानते थे। वे अहिंसा को एक बहुत शक्तिशाली सक्रिय शक्ति मानते थे। अहिंसा के अनुयायी हिंसा को देखकर कभी पीछे नहीं हटेंगे। बल्कि वे सत्य की स्थापना के लिए आत्म-यातना के माध्यम से हिंसा करने वालों के दिलों को बदलने के कार्य में खुद को समर्पित करेंगे। गांधी के अनुसार, हिंसा के भयानक जबड़े में निर्भय होकर प्रवेश करना अहिंसा कहलाता है। इस प्रकार, गांधी की अहिंसा की अवधारणा में कायरता या कायरता के लिए कोई स्थान नहीं था। वे कायरता से हिंसा को श्रेष्ठ मानते थे। अपने लेख 'द डॉक्ट्रिन ऑफ द स्वॉर्ड' में इस मामले पर टिप्पणी करते हुए वे कहते हैं कि अगर कायरता और हिंसा के बीच विकल्प दिया जाए तो वे हिंसा को प्राथमिकता देंगे। लेकिन उनका दृढ़ विश्वास था कि अहिंसा निश्चित रूप से हिंसा से श्रेष्ठ है और क्षमा दंड की तुलना में कहीं अधिक मर्दाना है।

मूल्यांकन

यद्यपि महात्मा गांधी ने अपने पूरे जीवन में अपनी सभी गतिविधियों में 'सत्य और अहिंसा' के सिद्धांत को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया, उन्होंने महसूस किया कि भारत के आम लोगों और यहां तक कि समकालीन कांग्रेस के अधिकांश नेताओं ने भी अहिंसा को स्वीकार नहीं किया था। एक "पंथ"। इस कारण उन्होंने टिप्पणी की कि उन्हें इस बात पर संदेह था कि कितने लोग अहिंसा के पंथ में पूरी तरह से विश्वास करते हैं। लेकिन उन्होंने सोचा कि उनके आंदोलन अहिंसा के पंथ में विश्वास करने वाले अहिंसक कार्यकर्ताओं पर बिल्कुल निर्भर नहीं थे। उन्होंने इसे अपने उद्देश्य के लिए पर्याप्त माना यदि वे व्यवहार में प्रिंट सिद्धांत का पालन करते हैं। उन दिनों की भाँति आज भी अहिंसा के मत में विश्वास करने वाले व्यक्तियों की भारी कमी है। नतीजतन, संकीर्ण स्वार्थों के संघर्ष, सत्ता के लिए संघर्ष, सामूहिक विनाश के हथियारों के लिए विश्वव्यापी प्रतिस्पर्धा, आधिपत्य स्थापित करने के लिए संघर्ष, आदि ने दुनिया को एक गहरे संकट के कगार पर खड़ा कर दिया है। गांधी के अनुयायियों की राय में, सत्य और अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा की प्रासंगिकता को न तो नज़रअंदाज़ किया जा सकता है और न ही नकारा जा सकता है। हालाँकि, मार्क्सवादी इसे एक यूटोपियन विचार मानते हैं क्योंकि सिद्धांत को व्यवहार में लाना असंभव है।

सत्याग्रह, अहिंसा के दर्शन के लिए गांधी के योगदान का केंद्र

यहां इस बात की जांच करना अच्छा होगा कि स्टेनली ई. जोंस "दुनिया में गांधी के योगदान का केंद्र" क्या कहते हैं। उसकी तुलना में बाकी सब मामूली है। सत्याग्रह गांधीवाद की सर्वोत्कृष्टता है । इसके माध्यम से, गांधी ने दुनिया के लिए एक नई भावना का परिचय दिया। यह दुनिया में गांधी के सभी योगदानों में सबसे बड़ा है।

सत्याग्रह क्या है?

सत्याग्रह (उच्चारण सत-याह-ग्रह) दो संस्कृत संज्ञाओं सत्य का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है सत्य ('सत' से - 'होना' प्रत्यय 'या' के साथ), और अग्राह, जिसका अर्थ है, "दृढ़ता से पकड़ना" (एक संज्ञा बनाई गई है) आगरा से, जिसका मूल 'ग्रह' - 'जब्त', 'ग्रैस', मौखिक उपसर्ग 'ए' - 'टू' 'की ओर) है। इस प्रकार सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है सत्य के प्रति समर्पण, सत्य पर दृढ़ रहना और असत्य का सक्रिय रूप से लेकिन अहिंसक रूप से विरोध करना। चूँकि गांधी के लिए सत्य तक पहुँचने का एकमात्र तरीका अहिंसा (प्रेम) है, इसलिए यह इस प्रकार है कि सत्याग्रह का तात्पर्य अहिंसा का उपयोग करके सत्य की अटूट खोज से है। माइकल नागलर के अनुसार सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है 'सत्य से चिपकना' और गांधीजी ने इसे ठीक इसी तरह समझा था: 'सच्चाई से चिपके रहना कि हम सब त्वचा के नीचे एक हैं, कि 'जीत/हार' टकराव जैसी कोई चीज नहीं है। क्योंकि हमारे सभी महत्वपूर्ण हित वास्तव में समान हैं, कि सचेत रूप से या नहीं, हर एक व्यक्ति एक दूसरे के साथ एकता और शांति चाहता है। कार्रवाई। सत्याग्रह को अक्सर अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन के रूप में परिभाषित किया गया है, जो महात्मा गांधी द्वारा सबसे प्रसिद्ध रूप से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए लागू किया गया था। जीन शार्प ने सत्याग्रह को केवल "गांधीवादी अहिंसा" के रूप में परिभाषित करने में संकोच नहीं किया।

सत्याग्रह के गांधी दर्शन

सत्याग्रह गांधी के लिए पूर्वकल्पित योजना नहीं थी। उनके जीवन की घटना उनके "ब्रह्मचर्य व्रत" की परिणति ने उन्हें इसके लिए तैयार किया। इसलिए उन्होंने रेखांकित किया: जोहान्सबर्ग में घटनाएँ अपने आप को इस तरह आकार दे रही थीं कि मेरी ओर से इस आत्म-शुद्धि को सत्याग्रह की तरह एक प्रारंभिक बना दिया। अब मैं देख सकता हूँ किमेरे जीवन की सभी प्रमुख घटनाएँ, जिनकी परिणति ब्रह्मचर्य व्रत से होती है, गुप्त रूप से मुझे इसके लिए तैयार कर रही थीं।

सत्याग्रह के मूल सिद्धांत

सत्याग्रह के तीन मूल सिद्धांत आवश्यक हैं: सत्य, अहिंसा और आत्म-पीड़ा। ये सत्याग्रह के स्तम्भ कहलाते हैं। गांधी की अहिंसा की समझ के लिए उन्हें समझने में विफलता एक बाधा है। ये तीन मूल तत्व संस्कृत शब्दों के अनुरूप हैं: सत/सत्य - खुलापन, ईमानदारी और निष्पक्षता का संकेत देने वाला सत्य □ अहिंसा/अहिंसा - दूसरों को चोट पहुँचाने से इंकार करना। □ तपस्या - आत्म-बलिदान की इच्छा। एक सत्याग्रही (अहिंसा कार्यकर्ता) के सत्य और अहिंसा गुणों की गांधीवादी अवधारणा

गांधी इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थे कि ऐसे लोगों को प्रशिक्षित करने की जरूरत है जो उनके सत्याग्रह अभियानों को आगे बढ़ा सकें। उन्होंने उन्हें अपने "सत्याग्रह आश्रमों" में प्रशिक्षित किया। एक सत्याग्रही से अपेक्षित कुछ बुनियादी गुण यहां दिए गए हैं।

एक सत्याग्रह को ईश्वर में जीवंत विश्वास होना चाहिए क्योंकि वह उसकी एकमात्र चट्टान है।

1. व्यक्ति को सत्य और अहिंसा को अपने धर्म के रूप में मानना चाहिए और इसलिए मानव स्वभाव की अंतर्निहित अच्छाई में विश्वास रखना चाहिए।
2. व्यक्ति को एक पवित्र जीवन जीना चाहिए और अपने जीवन और अपनी संपत्ति को त्यागने के लिए तैयार और तैयार रहना चाहिए।
3. व्यक्ति को किसी भी मादक द्रव्य के सेवन से मुक्त होना चाहिए, ताकि उसकी बुद्धि अविभाजित हो और उसका मन स्थिर हो।
4. समय-समय पर निर्धारित अनुशासन के सभी नियमों को इच्छुक हृदय से पालन करना चाहिए।
5. जेल के नियमों का पालन तब तक करना चाहिए जब तक कि वे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने के लिए विशेष रूप से सघन न हों। एक सत्याग्रही को किसी स्थिति को ठीक करने के लिए कष्ट सहने को स्वीकार करना चाहिए।
6. महात्मा गांधी अहिंसा के अग्रदूत और सत्य के महान समर्थक थे। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। उनके प्रमुख

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका ने उन्हें 'बापू' (राष्ट्रपिता) की उपाधि दी। इस प्रमुख भारतीय आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता के जन्मदिन को दुनिया भर में "अहिंसा के अंतर्राष्ट्रीय दिवस" के रूप में मनाया जाता है। सत्य और अहिंसा की अवधारणा के लिए उनका बहुत महत्व था। सत्य या सत्य, अहिंसा या अहिंसा गांधीजी के दर्शन की नींव हैं। शब्द 'अहिंसा' संस्कृत शब्द 'अहिंसा' का अनुवाद है। उन्होंने कहा कि इसके सकारात्मक रूप में, 'अहिंसा' का अर्थ है 'सबसे बड़ा प्रेम, सबसे बड़ा दान'। गांधी के अनुसार 'सत्य' शब्द 'सत्' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'अस्तित्व में होना'। इसलिए 'सत्य' शब्द से गांधी का अर्थ वह भी है जो न केवल अस्तित्व में है बल्कि सत्य भी है। गांधी के सत्य के सिद्धांत का लेखा-जोखा आवश्यक रूप से हमें अहिंसा की प्रकृति पर उनके विचारों पर विचार करने के लिए ले जाता है। गांधी स्वयं कहते हैं, "मेरे पास दुनिया को सिखाने के लिए कुछ भी नया नहीं है। सत्य और अहिंसा पर्वतों जितने पुराने हैं। मैंने जो कुछ किया है, वह दोनों में प्रयोग करने की कोशिश करना है, जितना कि मैं कर सकता था। ऐसा करने में मैंने कभी-कभी गलती की है और अपनी गलतियों से सीखा है। जीवन और इसकी समस्याएं इस प्रकार मेरे लिए सत्य और अहिंसा के अभ्यास में इतने सारे प्रयोग बन गए हैं ... वास्तव में यह सत्य की मेरी खोज के क्रम में था कि मैंने अहिंसा की खोज की। सत्य की धारणा से अहिंसा की धारणा के संक्रमण को और अधिक स्पष्ट रूप से समझाते हुए वे कहते हैं, "अहिंसा और सत्य इतने परस्पर जुड़े हुए हैं कि उन्हें अलग करना और अलग करना व्यावहारिक रूप से असंभव है। वे एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं, या बल्कि एक चिकनी बिना मुहर लगी धातु की डिस्क हैं। कौन कह सकता है कि कौन सा उल्टा है और कौन सा उल्टा? अहिंसा साधन है; सत्य अंत है। मतलब होना मतलब हमेशा हमारी पहुंच के भीतर होना चाहिए, और इसलिए अहिंसा हमारा सर्वोच्च कर्तव्य है। यदि हम साधनों का ध्यान रखते हैं, तो हम देर-सवेर अंत तक पहुँचने के लिए बाध्य हैं।

गांधी सत्य की पहचान ईश्वर से करते हैं। अनेक दार्शनिकों के अनुसार ईश्वर सर्वोच्च सत्य है। साथ ही गांधी कहते हैं कि सत्य के अलावा कुछ भी नहीं है। इसलिए सत्य और ईश्वर दोनों ही सर्वोच्च वास्तविकता या परम वास्तविकता के लिए खड़े हैं। और इसलिए दोनों की पहचान की जा सकती है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो सत्य को नकार सके। ईश्वर को नकारा जा सकता है क्योंकि नास्तिक ईश्वर को नहीं मानता। लेकिन नास्तिक सत्य की शक्ति को नकार नहीं सकता। इसलिए ईश्वर की पहचान सत्य से की जाती है।

उद्देश्य

1. यह पेपर सत्य और अहिंसा के बीच संबंध पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता है और यह दिखाने की कोशिश करता है कि गांधी सत्याग्रह से कैसे प्रभावित हुए।

2. गांधी के अनुसार, अहिंसा मानव जाति के लिए उपलब्ध सबसे बड़ी शक्ति है।

सत्याग्रह का अर्थ:

सत्याग्रह गांधी के भारतीय इतिहास, विशेष रूप से और सामान्य रूप से विश्व इतिहास में गांधी के महानतम योगदानों में से एक है। सत्याग्रह का सिद्धांत गांधी और उनके अनुयायियों द्वारा भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे शक्तिशाली और उपयोगी हथियार था। 'सत्याग्रह' शब्द संस्कृत के दो शब्दों 'सत्य' का अर्थ 'सत्य' और 'अग्रह' का अर्थ 'निर्धारित खोज' या 'सत्य पर पकड़' से मिलकर बना है। इसलिए, शब्द का शाब्दिक अर्थ है, 'सत्य पर आग्रह'। यह प्यार के सिद्धांत पर आधारित है और ' सभी के लिए प्यार' और 'सभी के लिए पीड़ित' में विश्वास करता है। यह किसी भी प्रकार की हिंसा के उपयोग को बाहर करता है क्योंकि यह इस दर्शन पर आधारित है कि मनुष्य पूर्ण सत्य को नहीं जानता है और इसलिए किसी को भी दंडित नहीं कर सकता है। पहले गांधी ने सत्याग्रह के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध शब्द का प्रयोग किया था लेकिन बाद में वे इस अभिव्यक्ति से असंतुष्ट हो गए। सत्याग्रह निष्क्रिय प्रतिरोध से कई मायनों में भिन्न है। सत्याग्रह सत्य और दृढ़ संकल्प पर आधारित है और किसी भी प्रकार की हिंसा या चोट से इंकार करता है। गांधी ने सत्याग्रह को आत्म-साक्षात्कार के वेदांतिक आदर्श पर आधारित किया। सत्य की खोज में उनकी रुचि थी। वह कहते हैं कि, "सत्य ईश्वर है"। सत्याग्रह गांधी द्वारा आविष्कृत एक नाम है, जिसका अर्थ है सत्य का पालन करना। इसका अर्थ है सार्वभौमिक बल।

सत्याग्रह के सिद्धांत:

सत्याग्रह को निम्नलिखित सिद्धांतों का पालन करना चाहिए: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शुद्धता, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, अभय, सभी धर्मावलंबियों के लिए समान सम्मान, अस्पृश्यता से मुक्ति, भारत में प्रत्येक सत्याग्रही को सात नियमों का पालन करना चाहिए, एक होना चाहिए ईश्वर में जीवंत विश्वास, सत्य और अहिंसा में विश्वास होना चाहिए, पवित्र जीवन जीना चाहिए आदि।

सत्याग्रही की विशेषताएं:

एक सत्याग्रही को ईमानदार होना चाहिए। उसे खुले विचारों वाला होना चाहिए, एक अनुशासित शिक्षक होना चाहिए, उसे खुद पर संयम रखना सीखना चाहिए। वह त्याग की ओर ले जाता है सत्याग्रही के लिए दृढ़ आचरण आवश्यक है। सादगी और विनम्रता को सत्याग्रही का प्रमुख कारक माना जाता है। एक सत्याग्रही अपने कार्यों में, विचारों में और वाणी में भी सत्य का अभ्यास करता है। सत्याग्रही के लिए प्रेम के साथ सत्य और अहिंसा आवश्यक है। गांधी कहते हैं कि "विश्व सत्य की आधारशिला पर टिका है।" सत्याग्रह कायरों और असहायों का हथियार नहीं है। गांधी का सत्याग्रह हिंसा को खारिज करता है। यह बिना हिंसा के युद्ध है। इसका अर्थ है बुराई का उसके विपरीत प्रतिकार अर्थात अच्छाई से उसमें नैतिक और धार्मिक अनुशासन का समावेश होता है। यह सक्रिय बल को संदर्भित करता है न कि निष्क्रिय बल को। गांधी का सत्याग्रह कभी भी लड़ाई को खारिज नहीं करता।

एक आंदोलन के रूप में सत्याग्रह का उद्देश्य हिंसा के तरीकों को बदलना था और पूरी तरह से सत्य पर आधारित था गांधी के लिए सत्याग्रह सत्य का पालन है और गांधी के लिए सत्य का अर्थ भगवान है। उसके लिए केवल सत्य ही शाश्वत है, बाकी सब क्षणभंगुर है। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रकाश के अनुसार सत्य की खोज करनी चाहिए और सत्य की इस खोज में उसे हमेशा स्वयं को सुधार के लिए खुला रखना चाहिए। उनका मानना था कि व्यक्ति को सत्य की खोज करनी चाहिए, हालांकि पूर्ण सत्य की खोज करना मनुष्य के लिए संभव नहीं है। अहिंसा सत्य की खोज के लिए इस साधन का निर्माण करती है और उसके लिए साधन और साध्य दोनों एक दूसरे से इस तरह जुड़े हुए हैं जैसे बीज और वृक्ष अभिन्न रूप से संबंधित हैं। सत्याग्रह की उनकी अवधारणा में अहिंसा बहुत महत्वपूर्ण है। वह मानता है कि "सत्य लक्ष्य है, अहिंसा या अहिंसा इसे साकार करने के लिए आवश्यक और एकमात्र साधन बन जाती है"।

अहिंसा:

गांधी के अनुसार, सत्याग्रह हिंसा के सभी रूपों को शामिल नहीं करता है, क्योंकि एक ओर तो बल प्रयोग, समाज के विकास को दबा देता है।

व्यक्ति और विरोधी के प्रति सम्मान दिखाने में विफल रहता है और दूसरी ओर, सत्य की दृष्टि को अस्पष्ट करता है। सत्याग्रह की उनकी अवधारणा इस धारणा पर आधारित है कि विरोधी भी एक इंसान है जिसके पास तर्क और अच्छाई की क्षमता है। गांधी ने हिंसा या दमन का कड़ा विरोध किया क्योंकि यह व्यक्ति की अखंडता के खिलाफ था। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों द्वारा सम्मान पाने का समान अधिकार है जैसा कि कांट भी रखता है, और अन्य लोगों की अखंडता और स्वतंत्रता के प्रति समान सम्मान दिखाने का नैतिक कर्तव्य रखता है। गांधी ने कहा कि हिंसा को कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता, भले ही इसका इस्तेमाल किसी भी नेक काम के लिए किया जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि गांधी के लिए साधन और साध्य अविभाज्य हैं। न्याय प्राप्त करने के लिए कोई दूसरों पर अपने विचार थोप नहीं सकता और उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश नहीं लगा सकता। गांधी के लिए हिंसा का प्रयोग न केवल विरोधी को नीचा दिखाता है बल्कि इसका प्रयोग करने वाले को एक कमतर इंसान भी बनाता है। उनका विचार था कि एक हिंसक व्यक्ति हमेशा "दुनिया के साथ युद्ध में रहता है और मानता है कि दुनिया उसके साथ युद्ध कर रही है और उसे निरंतर भय में रहना है।" इसलिए, हिंसा का परिणाम हमेशा पूरी तरह से लाचारी, अलगाव होता है और यह कार्य करता है हमलावर और समाज के बीच एक खाई पैदा करें। गांधी की अहिंसा की अवधारणा केवल हिंसा को अस्वीकार करने तक ही सीमित नहीं है; मन और शरीर में लोगों को चोट नहीं पहुँचा रहा है, लेकिन यह प्यार, क्षमा और करुणा के कुछ आवश्यक मूल्यों से परे है और इसमें शामिल है। अहिंसा न केवल दूसरों को नुकसान पहुंचाने से बचने का कार्य करती है बल्कि यह सकारात्मक मूल्यों पर आधारित है।

गांधी को अहिंसा या अहिंसा का अभ्यास करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, धैर्य और नैतिक साहस और इन सभी के उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

मन के परिवर्तन की ओर मुड़ें। इस परिवर्तन के लिए एक आंतरिक विवेक की आवश्यकता है जो सत्य को आधिक्य प्रदान करे। हममें से प्रत्येक के पास एक सापेक्ष सत्य है और अहिंसा एक उपकरण के रूप में कार्य करती है जो इन सत्य दावों के बीच मध्यस्थता करती है। अहिंसा का जीवन जीने के लिए गांधी ने कहा, किसी को अपने आंतरिक विवेक और भक्ति को पूरी तरह से जगाने के लिए एक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और अंत में व्यक्ति नैतिक और भौतिक दुनिया के बारे में सच्चाई का ज्ञान प्राप्त करता है। भारत में अहिंसक कार्रवाई की गांधी की रणनीति न केवल संवैधानिक मांगों को पूरा करने के लिए थी बल्कि यह आगे बढ़ी और कुछ बड़ा करने का लक्ष्य रखा। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह जानते थे कि मात्र संवैधानिक परिवर्तनों ने पहली छमाही में उपयोगी परिणाम नहीं दिखाए हैं, और इसलिए, उन्होंने सविनय-अवज्ञा आंदोलन का परिचय दिया जो एक अतिरिक्त-संवैधानिक रणनीति थी। रणनीति का पहला भाग 'जन समर्थन' हासिल करना था या दूसरे शब्दों में इसे 'जन आंदोलन' बनाना था। इस आंदोलन का उद्देश्य उच्च वर्ग, निम्न वर्ग या किसान समूह से सभी को शामिल करना था। इसका उद्देश्य न केवल विदेशी शासकों को जमीन छोड़ना था बल्कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद लोगों की मानसिकता से शासकों के प्रभाव को पूरी तरह से मिटा देना था। गांधी, एक जीवंत दूरदर्शी होने के नाते, उपनिवेशीकरण के प्रभाव को उपनिवेशित लोगों के दिमाग पर आसानी से देख सकते थे। वह जानता था कि लोग राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हो जाने पर भी मानसिक रूप से गुलाम बने रहेंगे। अपने देश के लोगों की अखंडता को बनाए रखने के लिए उन्होंने अहिंसा को सत्य की खोज के साथ जोड़ा। हालाँकि, जब हम भारतीयों की वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों का गहन निरीक्षण करते हैं, तब भी हम पाते हैं कि वे पूर्ण दासता के क्षेत्र में हैं और राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हैं। आजादी और अहिंसा का गांधी का सपना इक्कीसवीं सदी में भी अधूरा है।

गांधी का मानना था कि अहिंसा मानव सभ्यता के विकास के साथ विकसित हुई है। आदिम मनुष्य गुफाओं में रहते थे और मूल रूप से थे

नरभक्षी के पास रहने के लिए कोई निश्चित स्थान नहीं है। समय के साथ एक कृषि समाज की स्थापना हुई और मनुष्य बसने लगा। एक विकास हुआ और एक सामाजिक वातावरण में एक साथ रहने के लिए कानूनों और नियमों का पालन करते हुए मनुष्य एक परिवार के सदस्य से समुदाय का सदस्य बन गया। सभ्यता की धीमी प्रक्रिया के साथ हिंसा का अहिंसा में या हिंसा से अहिंसा में परिवर्तन हुआ। गांधी के लिए, मनुष्य की सभ्यता के साथ अहिंसा का यह धीमा विकास एक तथ्य है, जिसे वे व्यक्त करते हैं, "यदि यह अन्यथा होता, तो मानव प्रजातियों को अब तक विलुप्त हो जाना चाहिए था, यहां तक कि कई निचली प्रजातियां भी गायब हो गई हैं।"

गांधी का मानना था कि अहिंसा के अभ्यास के बिना सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। गांधी ने स्थापित करने के लिए एक जिज्ञासु तर्क का इस्तेमाल किया।

इस बिंदुमें गांधी ने कहा कि ईश्वर और सत्य एक ही हैं। उसी समय गांधी ने ईश्वर की एक सर्वेश्वरवादी अवधारणा को स्वीकार किया। उन्होंने तर्क दिया कि ईश्वर सभी प्राणियों में व्याप्त है। सभी प्राणी ईश्वर द्वारा एकजुट हैं और एकीकरण का कार्य प्रेम या अहिंसा के माध्यम से संभव हुआ है। तो अहिंसा अंततः ब्रह्मांड का सीमेंटिंग बंधन है जिसकी उत्पत्ति ईश्वर या सत्य में है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सत्य और अहिंसा दोनों का आपस में गहरा संबंध है। वे एक ही सिक्के के एक ही पहलू हैं। अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा के एक महत्वपूर्ण खाते से पता चलता है कि गांधी मनुष्य में गहरी जड़ वाली आक्रामक प्रवृत्ति से अवगत नहीं थे। समकालीन मनोवैज्ञानिक ने इंगित किया है कि यह वृत्ति मानव मानसिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। गांधी ने इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। अहिंसा का उनका लेखा-जोखा मनोवैज्ञानिक-सामाजिक विचारों की तुलना में उनके धार्मिक ग्रंथों के पढ़ने पर अधिक निर्भर प्रतीत होता है। यह एक प्रमुख महत्वपूर्ण बिंदु है जिसे अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा के खिलाफ उठाया जा सकता है। यदि अहिंसा मनुष्य के भीतर की जीवन-वृत्ति की अभिव्यक्ति है तो हिंसा मृत्यु-वृत्ति की अभिव्यक्ति है। गांधीजी एक देवदूत थे, अपने लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। वह प्रताड़ित और उत्पीड़ित मानवता के लिए एक मसीहा थे। वह अहिंसा, शांति और प्रेम की आत्मा हैं। हम कह सकते हैं कि सत्य और अहिंसा दोनों का आपस में गहरा संबंध है। वे एक ही सिक्के के एक ही पहलू हैं। अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा के एक महत्वपूर्ण खाते से पता चलता है कि गांधी को मनुष्य में गहरी जड़ वाली आक्रामक प्रवृत्ति के बारे में पता नहीं था। समकालीन मनोवैज्ञानिक ने इंगित किया है कि यह वृत्ति मानव मानसिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। गांधी ने इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। अहिंसा का उनका लेखा-जोखा मनोवैज्ञानिक-सामाजिक विचारों की तुलना में उनके धार्मिक ग्रंथों के पठन पर अधिक निर्भर प्रतीत होता है। यह एक प्रमुख महत्वपूर्ण बिंदु है जिसे अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा के खिलाफ उठाया जा सकता है। यदि अहिंसा मनुष्य के भीतर की जीवन-वृत्ति की अभिव्यक्ति है तो हिंसा मृत्यु-वृत्ति की अभिव्यक्ति है।

संदर्भ:

1. एम. शेपर्ड, महात्मा गांधी और उनके मिथक, सविनय अवज्ञा, अहिंसा और वास्तविक दुनिया में सत्याग्रह, लॉस एंजिल्स,
2. शेपर्ड प्रकाशन, 2002, http://www.markshep.com/nonviolence/books/myths.html
3. एमके गांधी, ऑल मेन आर ब्रदर्स, ऑटोबायोग्राफिकल रिफ्लेक्शंस, कृष्णा कृपलानी (संपा.), न्यूयॉर्क; कॉन्टिनम पब्लिशिंग कंपनी, 1990, vii।
4. एमके गांधी, यंग इंडिया, 22-11-1928, द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, वॉल्यूम। XXXVIII, अहमदाबाद; नवजीवन ट्रस्ट, 1970, 69।
5. एम.के. गांधी, यंग इंडिया, 20-12-1928, आईबिडेम में, 247.. द न्यू ज़ियोन हेराल्ड, जुलाई/अगस्त 2001, वॉल्यूम। 175, अंक 4, 17।
6. एमके गांधी, एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोग की कहानी, अहमदाबाद; नवजीवन ट्रस्ट, 2003, 254।
7. निर्मल कुमार बोस, गांधी, अहमदाबाद से चयन; नवजीवन ट्रस्ट, 1948,154।
8. बसंत कुमार लाल, समकालीन भारतीय दर्शन।
9. डीएम दत्ता, द फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी।
10. गांधी, महादेव के. आत्मकथा, सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी। महादेब देसाई द्वारा अनुवादित।